नुक्कड़ नाटक की धूंदलाती तस्वीर

पीछले दो दशक से हमारे देश में नुक्कड़ नाटकों के बारे में सैद्धांतिक चर्चाएं मानो रूक सी गई हैं। दूसरी और उसके उपयोग में भारी बाढ आने लगी हैं। और कीसी भी स्वरूप के नाटकों की तुलना में नुक्कड़ नाटक के प्रयोग कई गुना ज्यादा हो रहे हैं। स्कुल–कोलेजों से लेकर संमेलनों, शिविरों, बडे बडे फेस्टीवलों में नुक्कड नाटक एक तरह का 'म्युझीयम पीस' बन गया है। महानगरों, नगरों और गावों, कस्बो, बस्तीयों में मानो प्रचार का ढोल बन गया है। कोर्पोरेट सेक्टर, छोटी बडी युवा संगठनाएं, नारी संगठनों, एन.जी.ओ; सरकारें, राजनैतीक पार्टियां हर कोई अपने अपने उद्देश अनुसार उसका उपयोग कर रहे हैं। अब वो बन चुका है जींगल्स, सरकारी योजनाओं के प्रचार का माध्यम या फिर स्पर्धाएं और मनोरंजन का भद्धा ढोल!

उन्नीसवीं सदी में उसकी पैदाइश से शुरु कर के पिछली सदी के नौंवे दशक तक जो ज्यादातर वर्ग संघर्षों को गति देनेवाला नाट्य स्वरुप था वो इस स्थिति में क्यों आ गया? क्या पूंजीवाद के आज के स्वरूप में समाज में वर्गीय वास्तविकताएं खतम होती जा रही है? या फिर वर्ग संघर्ष मंद होता जा रहा है, उस कारण से? वास्तव में वर्ग–संघर्ष की संस्कृति धीरे धीरे बाज़ार की संस्कृति में लुप्त होती जा रही हैं। राजनीती में वर्गीय पहचानें धर्म, ज्ञाति, जाति, संप्रदायों की पहेचानों में तब्दील होती जा रही हैं। अगर यही सच्चाई है तो तो वर्ग संघर्ष की दबी हुई आग को भड़काने के लिए नुक्कड़ नाटकों का उपयोग और जोरशोर से होना चाहिये। आज की चुनौतीओं को देखते हुए उसके स्वरूप और प्रस्तुतियों के तौर–तरीकों में नये नये प्रयोगों की जद्दोजहद दिखाई देनी चाहियें। पर ऐसा कहीं दिखाई तो नहीं दे रहा है।

देश की स्वतंत्रता से लेकर आज तक जीतने भी ड्रामा स्कूल्स, राष्ट्रीय स्तर से लेकर प्रादेशिक स्तरों तक अस्तित्व में आये हैं उन में से एक भी स्कूल नुक्कड़ नाटक के बारे में ढंग का प्रशिक्षण देते हुए नहीं दिखाई देते हैं। क्यों? क्या उसकी ज़रुरत नहीं है? या फिर वो सिर्फ 'नोन–एक्टर्स' का या ऐमेच्योर्स का खेल है?

नुक्कड़ नाटक के बारे में कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण सवालों की पश्चाद्भू में गुजरात का सांस्कृतिक और मानव अधिकार संगठन 'दर्शन' गुजराती में दो किताबें नुक्कड़ नाटक को केन्द्र में रखते हुए प्रकाशित कर रहा है।

1) 'शेरी नाटकनुं स्वरुप अने राजनैतीक संस्कृती (नुक्कड नाटक का स्वरुप और राजनीतीक संस्कृती)
2) 'शेरी थिएटर' (नुक्कड थिएटर)

गुजरात के अग्रणी थिएटर ऐक्टीवीस्ट और सांस्कृतिक कर्मशील हिरेन गांधी ने लिखी हैं ये दोनों किताबें। दोनों किताबें गुजराती में लिखी गई हैं।

पहली किताब में नुक्कड़ नाटक का इतिहास, विकास और वर्गीय चरित्र को स्पष्ट करने की कोशीश की गई है। जिस में यूरोप में वह कैसे शुरू हुआ, शुरुआती दशकों में उसके उद्देश और स्वरुप कैसे थे, रशियन क्रांति की सफलता के बाद उसके उद्देश और स्वरुप में कैसे कैसे परिवर्तन आयें, भारत में स्वातंत्र्य संग्राम के दौरान 'इप्टा' ने कैसे वर्गीय चरित्र निखारने में और वर्गीय संघर्ष में उसका उपयोग शुरु किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सत्तर के दशक में कैसे वह पुनःजीवीत हुआ, नब्बे के दशक के बाद, दुनियाभर में

फैल रहे पूंजीवाद के एकचक्री और निरंकुश शासन में कैसे वह को–ओप्ट होता गया और अपनी दिशाओं से भ्रमित होता गया, इन सब का विवरण और विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। नुक्कड़ नाटक के स्वरुप और चरित्र के बारे में भी उस में चर्चा है।

युवाओं और सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक कर्मशीलों के लिये लिखी गई इस किताब में मुख्य तीन विभाग है। पहले विभाग में अलग अलग प्रकरणों में उपर बताये हुए मुद्दों को समाया गया है। दुसरे विभाग में गुजरात के प्रतिष्ठित थिएटर क्रिटिक डो. एस.डी. देसाईने इस किताब के बारे लिखा क्रिटिक है– जिस में वह कई अहम बिंदुओं को लेकर किताब के लेखक के विचारों के खिलाफ महत्वपूर्ण सवाल उठाते हैं। नुक्कड़ नाटक के बारे में, उसके राजनैतिक चरित्र के बारे में बहस छिडने के उद्देश से लिखी गई इस किताब में वह लेख ज्यों का त्यों शामिल किया गया है ताकि मौलिक बहस छिडें।

तीसरे विभाग में परिशिष्टों के रुप में नुक्कड नाटक को यूरोप, रशिया और भारत में वर्गसंघर्ष के लिए उपयोग में लेनेवालें और निखारनेवालें सांस्कृतिक और थिएटर कर्मशीलों तथा संगठनों का उपयोगी परिचय रखा गया है।

करीब 132 पेज में छपी इस किताब की कीमत है रू: 50.00(प्रति पुस्तक)

दूसरी किताब हैं 'शेरी थिएटर' (नुक्कड़ थिएटर)। इस के शीर्षक में 'थिएटर' शब्द का उपयोग सहेतुक किया गया है। इस में सिर्फ नुक्कड़ नाटक की बात नहीं है, उसके साथ साथ आज के दौर में नुक्कड़ों में हो रहे सभी तरह के नाटकों के बारे में चर्चा है; और वह लेखक ने उनके बिरादर साथी डो. सरूप ध्रुव के साथ मिलकर किये हए नुक्कड़ थिएटर के प्रयोगों के दौरान हुए कुछ महत्वपूर्ण अनुभवों और दोनों ने साथ मिलकर गुजरात के गाँवों, शहरों और देश के अन्य राज्यों में संचालित की हुई नुक्कड़ नाटक प्रशिक्षण शिविरों के दौरान हुए चाबीरूप अनुभवों के माध्यम से छेडी है।

इस किताब में नुक्कड़ थिएटर के प्रति सरकार, स्थापित हितों और पुलिस, ब्यूरोक्रसी वगैरह का रवैया कैसा दमनकारी है और दूसरी और मजदूर–किसान और शोषित समुदायों का रवैया कितना रोमांचक और प्रोत्साहित करनेवाला है उसके कुछ अनुभवों को रखा गया है। पिछले तीन दशक के दौरान के उनके इस थिएटर सफर ने, दोनों वर्गों की चेतनाओं ने उन्हें नुक्कड़ थिएटर के बारे में क्या क्या और कैसे कैसे सीखाया। शोषित समुदायों में बंटे श्रमजीवी वर्ग की वर्गीय चेतनाएं इस तरह के थिएटर आयामों के दौरान कैसे प्रगट होती है। उसके कुछ अनुभव भी उसमें शामिल है।

2002 के गुजरात जनसंहार के दौरान किये गये नुक्कड़ नाटक के प्रति गैर–मुस्लिम और मुस्लिम समुदायों ने कैसी कैसी प्रतिक्रियाएं दी। उस नाटक के दौरान मुस्लिम राहत शिविरों में कैसे कुछ महिलाएं और बच्चियां बेहोश हो जातीं थीं। उन घटनाओं के बाद नाटक खेलनेवाले युवा साथीओने राहत शिविरों में नाटक खेलना बंध किया और फिर क्यों और कैसे खेलना शुरू किया। इन संदर्भ का अनुभव सिर्फ रोमांचक हीं नहीं, नुक्कड़ नाटक के प्रभाव के बारे में नयी सीख देनेवाला भी साबित हुआ।

दूसरा एक अनुभव 2001 में गुजरात के कच्छ और सौराष्ट्र के कुछ हिस्सों को नामशेष कर देनेवाले भूंकप के बाद गुजरात सरकार द्वारा जारी की गई अन्यायी पुनःस्थापन नीति के खिलाफ शोषित समुदायों को संगठित करने और एक परिणामलक्षी जनआंदोलन खडा करने में नुक्कड़ नाटक और शेरी गानों ने कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और योजनाबद्ध तरीके से निश्चित व्यूहरचना के साथ अगर नुक्कड़ नाटक का

इस्तेमाल किया जाये तो वह कितना प्रभावशाली सिद्ध होता है। उसका जिक्र है। उस अनुभव में ये भी है कि शोषितों के जनआंदोलन के बाद कैसे सरकार अपनी नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने के लिये कैसी और कितनी मजबूर हो गई।

तो तीसरे अनुभव में बाबरी ध्वंस के बाद हुए दंगों के बाद अहमदाबाद के एक स्वैच्छिक संगठन द्वारा बनाये गये हिन्दु और मुस्लिम महिलाओं के दो मंडल के बीच का रिश्ता इतना तनावपूर्ण हो गया था कि दोनों आमने–सामने रहते हुए भी एक दूसरे का मुंह देखना नहीं चाहतीं थीं। उन दोनों को साथ लाने के लिये की गई नाटक शिबिर की वजह से उन महिलाओं के परस्पर के व्यवहार और दंगों के बारे में उनके नज़रियों में कितना महत्वपूर्ण बदलाव और मोड़ आया।

इस तरह के चौदह अनुभवों को किताब के दो विभागों में रखा गया है। पहले विभाग में नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुतियों के छह अनुभव है और दूसरे विभाग में नाट्य शिविरों के आठ अनुभव हैं। ये हरेक अनुभव नुक्कड़ थिएटर के बारे में ज़मीनीं हकीकतों को उजागर करते है। किसी न किसी महत्वपूर्ण बिन्दु या नज़रिया उजागर करता है।

करीब अट्ठासी पन्नों की इस किताब की किमत है रूः 50.00 (प्रति पुस्तक)। ये किताब भी युवाओं, नुक्कड़ नाटक कर्मीओं और परिवर्तनकामी संस्था–संगठनों के लिये तैयार की गई है।

ये दोनों किताबें सिर्फ प्रशिक्षण सामग्री नहीं है। वह नुक्कड़ नाटक और नुक्कड़ थिएटर के बारे में सैद्धांतिक विश्लेषण भी है और उस संदर्भ में आज के दौर के कुछ महत्वपूर्ण सवाल भी उजागर करतीं हैं।

यह गुजराती किताबों के लिये आप संपर्क कर सकतें हैं।

'दर्शन'
19–B, विश्वनगर सोसायटी, (पहली मंझिल पर)
विश्वकर्मा सोसायटी के पास,
जीवराज पार्क क्रोस रोड्स के पास,
अहमदाबाद – 380051 (गुजरात)

e-mail: darshan.org@gmail.com

दोनों किताबों की सहयोग राशि है रूः 50.00(प्रति पुस्तक) (पोस्टेज अलग से)

हिरेन गांधी (समकालीन रंगमंच पत्रिका के लिये)